एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 01 (अगस्त, 2024)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

भारतीय कृषि: चुनौतियाँ और सुधार

(*डॉ. कला चौधरी)
असिस्टेंट प्रोफेसर, किशोरभाई इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेस और रिसर्च सेंटर,
ऊका तरसाड़िया, यूनिवर्सिटी, बारडोली, सूरत, गुजरात – 394350,भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: kalachaudhary1811@gmail.com

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की नींव है और यह देश के लगभग 60% लोगों को रोजगार प्रदान करती है। भारतीय कृषि प्रणाली प्राचीन काल से विकसित हुई है और इसमें समय-समय पर बदलाव आए हैं। कृषि न केवल खाद्यान्न उत्पादन का साधन है, बल्कि यह देश की संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक ताने-बाने से भी गहराई से जुड़ी हुई है। भारतीय कृषि में हो रहे बदलाव और चुनौतियों को समझना महत्वपूर्ण है, ताकि इसे और अधिक समृद्ध और स्थायी बनाया जा सके।

कृषि का महत्व

कृषि किसी भी देश की आर्थिक और सामाजिक संरचना का आधार होती है, विशेषकर भारत जैसे देश में जहां इसकी प्रमुखता बहुत अधिक है। भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की 70% से अधिक आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। कृषि का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान महत्वपूर्ण है, जो जीडीपी का करीब 15-17% हिस्सा बनाता है। यह क्षेत्र खाद्य उत्पादन, रोजगार सृजन, और निर्यात में बड़ी भूमिका निभाता है। भारत में उगाई जाने वाली मुख्य फसलें धान, गेहूं, मक्का, गन्ना, चाय, कपास, जूट, और कई तिलहन और दलहन शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि से जुड़े उद्योगों का विकास भी कृषि पर निर्भर करता है।

कृषि का महत्व कई दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है:

1. **खाद्य सुरक्षा:** कृषि का मुख्य उद्देश्य देश की आबादी के लिए खाद्य उत्पादन सुनिश्चित करना है। अनाज, सब्जियाँ, फल, और अन्य कृषि उत्पाद लोगों की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और भोजन की उपलब्धता बनाए रखते हैं।
2. **रोजगार का स्रोत:** भारत की लगभग 60% आबादी कृषि पर निर्भर करती है। यह ग्रामीण इलाकों में रोजगार का प्रमुख साधन है, जहाँ सीमांत और छोटे किसान अपने जीवनयापन के लिए खेती करते हैं।
3. **अर्थव्यवस्था में योगदान:** कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यह सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इसके अलावा, कृषि से जुड़े उद्योग, जैसे खाद्य प्रसंस्करण, वस्त्र उद्योग और डेयरी उद्योग भी कृषि पर निर्भर हैं।
4. **निर्यात में योगदान:** भारत कई कृषि उत्पादों का प्रमुख निर्यातक है। चाय, चावल, मसाले, कपास, और गन्ने से बने उत्पादों का अंतरराष्ट्रीय बाजार में बड़ा हिस्सा है। यह निर्यात विदेशी मुद्रा अर्जित करने में मदद करता है और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाता है।
5. **कृषि आधारित उद्योगों का विकास:** कृषि न केवल खुद एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, बल्कि यह कई अन्य उद्योगों को भी पोषण देती है। खाद्य प्रसंस्करण, कपड़ा उद्योग, डेयरी, चीनी मिलें, और जैव-ईंधन उद्योग कृषि से सीधे जुड़े हैं।
6. **सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व:** भारतीय समाज में कृषि का गहरा सांस्कृतिक महत्व है। देश के त्योहार, रीति-रिवाज, और सामाजिक संरचना कृषि से गहरे जुड़े हुए हैं। फसल उत्सव (जैसे पोंगल, मकर संक्रांति, बैसाखी) और ग्रामीण जीवन की धुरी कृषि ही है।
7. **पर्यावरणीय स्थिरता:** सतत कृषि पद्धतियाँ पर्यावरण के संरक्षण में मदद करती हैं। जैविक खेती, मिश्रित खेती और प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग से पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है। पेड़ों की खेती और मृदा संरक्षण तकनीकें मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखने में मदद करती हैं।
8. **ग्रामीण विकास:** कृषि का विकास ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के साथ सीधे जुड़ा हुआ है। जब कृषि क्षेत्र में सुधार होता है, तो ग्रामीण बुनियादी ढांचा, जैसे सड़कों, सिंचाई प्रणाली, और बिजली की आपूर्ति में भी सुधार होता है।

कृषि की चुनौतियाँ

1. जलवायु परिवर्तन और मौसम की अनिश्चितता: पिछले कुछ दशकों में जलवायु परिवर्तन का कृषि पर गहरा प्रभाव पड़ा है। अनियमित मानसून, सूखा, बाढ़, और अत्यधिक तापमान ने फसल उत्पादन को प्रभावित किया है। किसान मुख्य रूप से वर्षा आधारित खेती पर निर्भर होते हैं, और इस अनिश्चितता के कारण उनकी उपज में भारी गिरावट देखी जा रही है।

2. सिंचाई की सीमित उपलब्धता: भारत का केवल 45% कृषि क्षेत्र सिंचित है, जबकि बाकी खेती मानसून पर निर्भर रहती है। ग्रामीण इलाकों में अभी भी उचित सिंचाई सुविधाओं का अभाव है, जिससे किसानों को सूखे के समय में भारी नुकसान उठाना पड़ता है।

3. मृदा उर्वरता का ह्रास: अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से मिट्टी की उर्वरक क्षमता घटती जा रही है। इससे न केवल मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है, बल्कि फसल उत्पादन की क्षमता भी कम हो रही है। मृदा प्रदूषण भी एक प्रमुख चिंता का विषय बन गया है।

4. आर्थिक समस्याएँ: भारतीय किसान अक्सर कर्ज के बोझ तले दबे होते हैं। बैंकों से ऋण मिलने में कठिनाई और साहूकारों से कर्ज लेने की मजबूरी से किसान आर्थिक रूप से कमजोर हो जाते हैं। कई बार कर्ज न चुका पाने की स्थिति में किसान आत्महत्या तक करने को मजबूर होते हैं।

5. बाजार तक पहुँच और उचित मूल्य: कृषि उत्पादों के लिए उचित बाजार और सही कीमत न मिलना भी एक बड़ी समस्या है। बिचौलियों के कारण किसानों को उनके उत्पाद का सही मूल्य नहीं मिल पाता, जिससे वे आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं।

कृषि में सुधार के लिए उपाय

1. तकनीकी उन्नति और आधुनिक उपकरण: भारतीय कृषि को अधिक उत्पादनक्षम और लाभकारी बनाने के लिए तकनीकी सुधार आवश्यक हैं। आधुनिक उपकरणों का उपयोग, जैसे ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, और ड्रिप सिंचाई प्रणाली, किसानों को अधिक उत्पादन करने में मदद कर सकते हैं। इसके साथ ही, जैविक खेती और कृषि ड्रोन जैसी नवीनतम तकनीकों का उपयोग भी बढ़ रहा है।

2. सिंचाई और जल प्रबंधन: सिंचाई के लिए 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना' जैसे सरकारी कार्यक्रम किसानों के लिए एक वरदान साबित हो रहे हैं। इन योजनाओं के माध्यम से किसानों को जल संसाधनों का सही उपयोग करना सिखाया जा रहा है। इसके अलावा, वर्षा जल संग्रहण और माइक्रो-सिंचाई तकनीक को बढ़ावा दिया जा रहा है।

3. मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना: 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' के माध्यम से किसानों को उनकी जमीन की उर्वरता और आवश्यक पोषक तत्वों की जानकारी दी जाती है। इससे किसान सही उर्वरकों और फसलों का चयन कर सकते हैं, जिससे उनकी उत्पादकता में सुधार होता है।

4. कृषि बीमा: 'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना' के तहत प्राकृतिक आपदाओं, सूखे, बाढ़, और अन्य समस्याओं के कारण होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए किसानों को बीमा का लाभ मिल रहा है। यह योजना किसानों को जोखिम से बचाने में मदद करती है और उन्हें वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है।

5. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना: इस योजना के तहत किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है ताकि वे अपनी कृषि संबंधी जरूरतें पूरी कर सकें।

6. ई-नाम (e-NAM): 'राष्ट्रीय कृषि बाजार' या ई-नाम किसानों को डिजिटल प्लेटफार्म पर उनके उत्पाद बेचने की सुविधा प्रदान करता है। इसके माध्यम से किसान अपने उत्पादों का सीधा बाजार तक पहुंच बना सकते हैं और उन्हें बेहतर मूल्य प्राप्त हो सकता है। इससे बिचौलियों की भूमिका कम होती है और किसानों को सही दाम मिलता है।

7. जैविक खेती का प्रोत्साहन: सरकार और कई गैर-सरकारी संगठन जैविक खेती को बढ़ावा दे रहे हैं। यह न केवल पर्यावरण के लिए बेहतर है, बल्कि इससे किसानों को भी अधिक लाभ प्राप्त हो रहा है। जैविक उत्पादों की बाजार में उच्च मांग है, जिससे किसानों की आमदनी में वृद्धि हो रही है।

निष्कर्ष

भारतीय कृषि में अभी भी कई चुनौतियाँ हैं, लेकिन इसमें सुधार की अपार संभावनाएँ हैं। सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ और किसानों की मेहनत के बल पर भारतीय कृषि को और सशक्त बनाया जा सकता है। तकनीकी सुधार, सिंचाई प्रणाली में सुधार, और कृषि बाजार तक बेहतर पहुंच से किसान न केवल आत्मनिर्भर बन सकते हैं, बल्कि वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी भी हो सकते हैं। यदि इन सुधारों पर तेजी से काम किया जाए, तो भारत न केवल कृषि उत्पादन में आत्मनिर्भर बनेगा, बल्कि यह विश्व का खाद्य आपूर्ति केंद्र भी बन सकता है।